



Hargharpanditji

॥ श्री पार्वति चालीसा ॥

ॐ उमायै नमः

---

# FULL DISCLAIMER

---

*This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.*

*This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.*

*Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.*

*Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.*

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR"

## ॥ श्री पार्वति चालीसा ॥

### ॥ दोहा ॥

जय गिरी तनये दग्यजे शंभु प्रिये गुणखानि।  
गणपति जननी पार्वती अंबे! शक्ति! भवानी॥

### ॥ चौपाई ॥

ब्रह्मा भेद न तुमको पावे,  
पंच बदन नित तुमको ध्यावे।  
षड्मुख कहि न सकत यश तेरो,  
सहसबदन श्रम करत घनेरो॥

तेरो पार न पावत माता,  
स्थित रक्षा लय हित सजाता।  
अधर प्रवाल सदृश अरुणारे,  
अति कमनीय नयन कजरारे॥

ललित ललाम ललाट विराजे,  
बाल चंद्र अति सुंदर साजे।  
कनक वर्ण तनु अति सुहावन,  
अमिय सुरभि लसत मनभावन॥

कनक भूषण मनोहर धारे,  
लाल वस्त्र शोभित तन सारे।  
कुंजित केश अरु मुकुट विराजे,  
कोटिक चंद्र बदन पर लाजे॥

मंद मंद मुस्कान तुम्हारी,  
त्रिभुवन जन को करत सुखारी।  
इंद्रादिक सब देव तुम्हारे,  
पूजत चरण सदा मन लाए॥

हिमाचल के घर तुम आई,  
जन्म लिया गौरि कहलाई।  
महादेव से प्रेम बढ़ायो,  
तप करि कठिन उन्हें पति पायो॥

शिव को जब तुमने अपनाया,  
जग में मंगल दीप जलाया।  
नंदी भृंगी संग सुखकारी,  
शिव परिवार भयो हितकारी॥

गणपति कार्तिकेय दुलारे,  
सबके संकट हरनिहारे।  
देव दनुज नर मुनि सब ध्यावें,  
मां पार्वती कृपा बरसावें॥

दुर्गा काली रूप तुम्हारा,  
करत सदा दुष्टन संहारा।  
तुम ही अन्नपूर्णा माता,  
सब जग पालक सुखदाता॥

भक्तन की तुम लाज बचावो,  
संकट में तुरंत सहावो।  
जो कोई श्रद्धा से ध्यावे,  
मनवांछित फल वह नर पावे॥

नारी नर जो पाठ कराहीं,  
सुख संपत्ति नित घर आहीं।  
शिव पार्वती कृपा तुम्हारी,  
रहे सदा जन पर हितकारी॥

### ॥ दोहा ॥

जय पार्वती माता अम्बा, शिव संग सदा सहाई।  
जो यह चालीसा गावे, मनवांछित फल पाई॥